REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

वैश्विक हिंदी और बौद्ध दर्शन

डॉ. जयश्री शिंदे
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

प्रस्तावना -

"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय"
"भवतु सब्ब मंगलम"

वैश्विकरण एक अ द्भूत शक्ति है, जो मनुष्य के बीच आर्थिक, राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक बहु आयामो में राष्ट्रीयता से ऊपर सोचने की प्रक्रिया है । वैश्विकरण आज जरुरी हो गया है, उसे स्वीकार करने से तात्पर्य है, राष्ट्र को विकसित बनाना । वैश्विकता अर्थात सीमित दायरे से ऊपर उठकर विश्वमानव में तब्दील होना । वैश्विकरण मानवतावादी चेतना है तथा वैश्विकता मानवियाता का विस्तार।

भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुंबकम' को एक जीवनार्थ माना गया है । यहां विभिन्न भाषाएँ एवं विभिन्न जातीयाँ है, फिर भी यहाँ के लोग भाईचारे से कंधे से कंधा मिलाकर उन्नति की ओर अग्रेसर हो रहे है । अब तो पूरा विश्व एक हो गया है । भारत में वैश्विकरण की प्रक्रिया का आरंभ वास्को-द-गामा के भारत खोज से होता है । वैश्विकरण अर्थात अन्तरर्राष्ट्रीय एकीकरण की भावना । एकीकरण की भावना में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । इंटरनेट (अंतरजाल) ने विश्व में हिंदी को बहुआयामी मंच प्रदान किया है। संस्कृति और सभ्यता को बढ़ावा देने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

हिंदी भारत देश की राजभाषा एवं संपर्क भाषा है । वह सर्वाधिक सशक्त, समृद्ध, वैज्ञानिक गुणों से युक्त संपन्न भाषा है। भारत के संविधान में जिस हिंदी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया है । उस खडीबोली हिंदी का विकास निम्नस्वरूप देखा जा सकता है - वैदिक > संस्कृत, संस्कृत > पाली, पाली > प्राकृत, प्राकृत > अपभ्रंश, अपभ्रंश > आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ (हिंदी, बंगला, गुजराती, मराठी आदि)

मध्यकालीन भारतीय आर्य – भाषाओं में सर्वप्रथम पाली भाषा का विकास हुआ । जब संस्कृत साहित्यिक स्तर पर सर्वोत्कृष्ट, समृद्ध थी और ग्रामीण भाषा के रूप में पाली भाषा विद्यमान थी, तब सर्वप्रथम तथागत बुद्ध ने बौद्ध दर्शन की शिक्षा देने के लिये लोकवाणी (उस समय पाली थी) को राष्ट्र वाणी का रूप दिया । प्राकृत से पाली शद्ब की व्युत्पत्ति हुई है । यथा- प्राकृत > पइअ > पाली

'अभिधानप्प दीपक' के अनुसार 'पा' धातू में लिंग प्रत्यय के योग से पाली शब्द बना है, जिसका अर्थ पालन या रक्षा कारना है । 'पालयति राक्षतीति पाली' अर्थात जिस भाषा से बुद्ध के वच नों की रक्षा हुई है, वह पाली है । तत्कालीन समय में पाली समग्र भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, तथा संपर्क भाषा थी । उसका अपना एक अंतरराष्ट्रीय महत्व बना और उसका प्रचार चीन, जपान , श्रीलंका तक व्याप्त था , आज भी उसका स्वरूप उन्हीं देशो में सुरक्षित है |

वैश्विकरण के इस दौर में आज बौद्ध दर्शन प्रासंगिक है । वैश्विकरण में विश्व मानवतावाद खत्म होने का खतरा मंडरा रहा है , बल्कि उसका मुख्य उद्देश तो विश्व मानवता ही है । विश्व में भारत की संस्कृति को आदर्श संस्कृ ति माना जाता है ।

इसीलिये पूरी दुनिया भारतीय संस्कृति को पसंद करती है । संस्कृति कोई एक चीज नहीं होती, कई चीजों को मिला-जुलाकर वह बनती है । भारत देश की लंबी परंपरा, इतिहास, भूगोल और सिंधू घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन में फली–फूली, जिसमें खुद की प्राचीन विरासत सम्मिलित है। भारत के पडोसी देशों के साथ विश्व मानवता के संबंध बने। भारत में अनेक धर्मों का उद्भव तथा विकास हुआ। बौद्धधम्म, जैन, हिंदू, सिख,इसाई आदि धर्म भारत की प्राचीन संस्कृति है । मोहंजोदाड़ों की खुदाई में सिंधू संस्कृति के पूरे अवशेष मिले है । जिसे हम आज सिंधू संस्कृति अर्थात स्मार्ट सीटी के नाम से जानते हैं। यह संस्कृति बौद्धकालीन है । बौद्ध धम्म केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में फैला हुआ था और आज भी है । 'बुराई पर अच्छाई की जीत' कहावत के मुताबिक विश्व में बौद्ध धम्म मैत्री, अहिंसा, शांति का संदेश प्राचीन काल से देता आ रहा है । बौद्ध दर्शन में साधुता, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, सबका कल्याण हो की भावना, समता, स्नेह, करुणा, बंधुता, दया-दान तथा सुचिता और मानव लोक कल्याण की भावना प्रमुख है । वह सुखमय, मध्यम जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है । 'अकुशल कर्म का त्याग, क्रोध का त्याग तथा क्षमाशील होने की शिक्षा बौद्ध धम्म ने दी है।

भारत को बुद्धकाल में 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। यहां जब बौद्ध शासकों की सत्ता थी तब देश का राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश आदर्श था जिसका प्रभाव आज हम पूरे विश्व में देख सकते है। जब तक भारत बौद्धमय था तब तक देश ने कभी भी परतंत्र की धूल नहीं चखी । राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम की शिक्षा बौद्धदर्शन में है , इसीलिए म्यानमार, बर्मा, थाइलंड, श्रीलंका, जपान , केनिया तथा चीन जैसे राष्ट्र अपने देश के लिये मरमिटने को सदैव तत्पर रहते है । कंबोडिया, वियतनाम, इंडोनिशिया, मेलबर्न, रुस, मंगोलिया आदि देशों में बौद्धधम्म का प्रचार तथा प्रभाव आज भी दिखायी देता है।

बौद्ध धम्म के प्रचार–प्रसार का सारा श्रेय सम्राट अशोक को ही जाता है। उन्होंने अपनी पुत्री संघमित्रा तथा पुत्र महेंद्र को श्रीलंका में धम्म प्रचार के लिये भेज दिया था । जिन्होंने वहां अहिंसा का प्रचार किया, साथ में युद्ध बंद करके सच्चे हृदय से अपनी प्रजा के लिए पुनरुद्धार करना चाहा । सम्राट अशोक ने बौद्ध धम्म को अपनाया और प्रजा के लिए कल्याणकारी योजनाएँ अपनायी ।

बुद्ध ने 'मध्यम मार्ग' बताया । वे कहते थे कि, मुझ पर श्रद्धा रखकर बिना समझे ही मेरे बनाये मार्ग को ना अपनाओं, बल्कि आओ और देखो, इस धम्म की परीक्षा करो । प्रत्येक को अपने चित्त में अनुभव करना होगा – 'अत्त दीप भव', अर्थात हे भिक्षुओं ! तुम अपने लिये स्वयं दीपक हो दूसरे की शरण में न जाओ । बुद्ध ने चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग बताए जो मनुष्य जीवन के उत्तम मार्ग है । उन्होंने बताया कि जन्म है इसीलिये मृत्यु है, जन्म ही दु:ख का कारण है । बुद्धने मानव को दु:ख से मुक्ति का मार्ग बताया। इसे ही मध्यम मार्ग कहा है। हम उसे निम्नस्वरूप देख सकते है-

*** चार आर्य सत्य :** १. दु:ख, २. दु:ख का कारण, ३. दु:ख का निरोध, ४. दु:ख निरोध का उपाय -"जरा, व्याधी और मरण" । जन्म से ही ये विविध दु:ख उत्पन्न होते हैं।

* अ**ष्टांगिक** मार्ग : १. सम्यक दृष्टि, २. सम्यक संकल्प, ३. सम्यक स्मृति, ४. सम्यक वाक, ५. सम्यक कर्मान्त, ६. सम्यक आजीविका, ७. सम्यक व्यायाम, ८. सम्यक समाधि।

बौद्ध धम्म विज्ञानवादी विश्वधर्म है। उसे आज संपूर्ण विश्व मानवता का धर्म इस रूप में स्वीकार करता है। भारत में सभी दर्शनों पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव दिखाई देता है। सम्राट अशोक, सम्राट कनिष्क और सम्राट हर्षवर्धन इनके कारण भारत में बौद्ध धम्म बहुत लंबे समय तक राजधर्म बना रहा । वैष्णव धर्म पर बौद्ध धम्म का अधिक प्रभाव है । करुणा, जनसेवा, आदर्श, एकात्मिकता, प्राणीमात्र का कल्याण तथा मोक्ष आदि विचार बौद्ध दर्शन से ही वैष्णव धर्म में आये है | इसाई धर्म पर भी बौद्ध दर्शन का प्रभाव है | बोधीसत्व ही ग्रीक रोमन चर्च में 'जोसफ' हो गये । इस्लाम धर्म पर भी बौद्ध धर्म का प्रभाव है। बौद्धों का निर्वाण ही मुस्लीम सुफियो के यहाँ 'फना' होना है । इस्लाम धर्म का प्रचार एशिया के जीन प्रदेशों में हुआ, वे सभी उसके पहले बौद्ध धम्म के प्रधान केंद्र थे।

बौद्ध दर्शन का स्त्रोत नैतिकता एवं सहअस्तीत्व है । नैतिकता सह अस्तित्व की आधारशीला है । मनुष्य सर्वश्रेष्ठ होनेपर भी वह शाश्वत नहीं है । प्रतिक्षण परिवर्तन होनेवाला है । सब प्रणियों के प्रति 'मैत्री भावना' ही बुद्धदर्शन की

लोकप्रियता का प्रमुख कारण है। तथागत का बौधदर्शन ही सत्य तत्व है। नैतिकता सत्य की शक्ति है, बुद्धि और विवेक इसके संबंध है। शील इसका चरित्र है, प्रेम, करुणा एवं अस्तित्व इसके आचरण हैं और जीते जी पूर्णता की प्राप्ति इसका लक्ष है।

बौध्द दर्शन पर दु:खवाद का मिथ्या आरोपन किया गया है। बुध्द ने जीवन जगत की चार सच्चाईयों को बहुत गंभीरता से समझाया है। उनकी वाणी समझने पर ही उसका सही अर्थ समझ में आता है। दु:ख जीवन की एक सच्चाई है। उसका समुदय तृष्णाजन्य राग और द्वेष से होता है। इन कारणों का उत्खनन हो जाए तो दु:ख का भी मूलोच्छेदन अपने आप हो जाएगा। इसके लिए अष्टांगिक मार्ग है। दु:ख, दु:ख का कारण, दु:ख का निवारण अर्थात निरोध और निरोध का उपाय, इन चारों को आर्यसत्य कहा गया है। बुद्ध की शिक्षा का अंतिम लक्ष्य दु:ख निरोध है।

बुद्ध की दु:ख संकल्पना जितनी व्यक्ति से संबंधित है , उससे कही ज्यादा वह सामाजिक है । संसार में व्याप्त दु:ख एवं विसंगतियों को देखकर तथागत बुद्ध के मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ। इन दु:खों से मानव समाज को मुक्त करने के लिये तथागत ने चार आर्य सत्यों – दु:ख, दु:ख समुदाय, दु:ख निरोध एवं, दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा तथा अष्टांगिक मार्ग के आधारपर अपने संपूर्ण चिंतन एवं जीवन दर्शन की नीव रखी। उन्होंने अनुभव एवं तर्क के आधार पर जीवन के सत्य को परखा है । ओशो के अनुसार – "बुद्ध धर्म के पहले वैज्ञानिक हैं। यदि समझने के लिये तैयार हो तो बुद्ध की नौका में सवार हो जाओ ।" बौद्ध धम्म की आध्यात्मिक एवं सामाजिक अवधारणाओं के कारण ही समाज में बुद्धिवाद एवं तर्क को प्रोत्साहन मिला है। इसी वजह से बुद्ध को विश्व गुरु माना जाता है।

परम सत्य तक पहुञ्चने की एक विद्या और विधि होती है, जो भारत के पास थी। अंतर्मुखी होकर भीतर की सच्चाईयों को देखने लगे तो एक ओर मन के मैल उतरते जायेंगे, तथा दूसरी ओर उससे अधिक गहरी सच्चाई का दर्शन होता जायेगा। ऐसा करते-करते परम सत्य तक पहुँचे कि सारे मैल उतर जायेंगे। बुद्ध ने संसार को यह विद्या सिखाई इसीलिए वे विश्व गुरु बने। वे सच्चाई की अनुभूति देखकर बुध्द बन गये, दु:खों से मुक्त हो गये, उनका चित्त नितांत निर्मल हो गया।

बुद्ध विश्व के महान दार्शनिक एवं विचारकों में से एक है और उनका दर्शन विश्व का क्रांतिकारी दर्शन है। बौद्धदर्शन ने विश्व को प्रभावित किया और विश्व शान्ति का उपदेश दिया। उन्होंने बताया कि मनुष्य को मध्यम मार्ग पर चलकर ही निर्वाण संभव है। मानवतावादी समस्त गुणों से बुद्ध परिपूर्ण थे। उनमे क्षमा, सहनशीलता, त्याग, दया, स्नेह, करूणा थी।

वैश्विक स्तर पर भारत के अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रहे है , उसका कारण बौद्ध दर्शन ही है। इस दर्शन के विश्वव्यापि प्रचार के कारण भारतीय संस्कृति को विशेष पहचान मिली है। बुद्ध ने अहिंसा, दया, परोपकार, सहिष्णुता, नैतिकता, विश्व–बंधुत्व, मानव कल्याण और आदर्श संस्कृति के साथ ही जाति प्रथा का विरोध कर मानवतावादी धारणाओं का प्रचार किया। सांस्कृतिक दृष्टी से बौद्ध दर्शन का अनन्य साधारण महत्व है । इस दर्शन को माननेवाले चीन, जपान, श्रीलंका, बर्मा, मंगोलिया, तिब्बत, जावा, सुमात्रा तथा थाइलंड जैसे देशों ने भारत को पवित्र तीर्थ क्षेत्र बना दिया। इसी कारण बौद्ध दर्शन विश्व में अपना स्थान बनाने में कामयाब हुआ है। यह दर्शन मानवकल्याण और शांति का उपदेश देने के साथ ही साथ सुखी तथा संपन्न,समृद्ध जीवन की कामना करते हुए संपूर्ण विश्व को मैत्रीपूर्ण भावना से एकता के सूत्र में बांधने में सहायक तथा उपादेय है।

अंत: तथागत के बुद्धदर्शन को डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने 'बुद्ध और उसका धम्म' यह पुस्तक लिखकर पुनर्जीवित किया। उन्होंने 14 अक्तूबर सन् 1956 में प्रतिज्ञा ली कि, मैं भारत बौद्धमय करुंगा और स्वयं लाखों अनुयायीयों के साथ बौद्ध धम्म का स्वीकार किया । भारत से लुप्त हुई बुद्ध की विपश्यना विद्या को पुन: भारत में लाने का कठिन कार्य सत्यनारायण गोयंका गुरुजी ने किया है। यही विपश्यना विद्या विश्वशांति और मंगल मैत्री की भावना का संदेश देते हुए भारत की संस्कृति को वैश्विक बनाने में कारगर साबित हो रही है। भारतीय संस्कृति में समन्वय की भावना है । साथ ही सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की पहचान है, जिसकी भारतीय संविधान की उद्देशिका में महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भः

1. भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा – डॉ. लक्ष्मिकान्त पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी
2. बुद्ध विचारधारा के विविध आयाम – डॉ. पुष्पा यादव
3. भगवान बुद्ध जीवन और दर्शन- धर्मानंद कोसंबी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

4. निर्मल धारा धर्म की – सत्यनारायण गोयंका
5. बुद्ध और बौद्ध धर्म – आचार्य चतुरसेन
6. क्या बुद्ध दुखवादी थे ? - सत्यनारायण गोयंका
7.दर्शन बौद्ध दर्शन- डॉ.भानुदास आगेडकर, साहित्य सागर कानपुर

डॉ. जयश्री शिंदे
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।